CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Kashi Maharani Collection, Ramnagar Fort, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीगणेशायनमः। जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि॥
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥१॥ धराधरेन्द्रन
न्दिनीविलासबन्धसिन्धुरे स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे॥ कृपाकटाक्षधोरणी विभो
निरुद्धदुर्द्धरे यदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो हमोऽस्तु वस्तुनि॥२॥ जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणाम
णिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे॥ मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदम
द्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥३॥ ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गया निपीतपञ्चसायकन्नम
न्निलिम्पनायकम्॥ सुधामयूखरेखया विराजमानशेखरं महः कपालिसम्पदे सरिज्जटा
लमस्तु नः॥४॥ सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरः प्रसूनधूलिधोरणी विधुसराङ्घ्रिपीठभु
कः॥ भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥५॥ क
रालभालपट्टिकाधगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके॥ धराधरेन्द्रनन्दि

Kashi Maharani Collection, Ramnagar Fort, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नीकुचाग्रपत्रचित्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ६ ॥ नवीनमेघमण्डली निरुद्ध
दुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ॥ निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसि
न्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ७ ॥ प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा
विलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबन्धकन्धरम् ॥ स्मरच्छिदं पुरच्छिदं जगच्छिदन्धकच्छि
दं तमं शिच्छदं मखच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ८ ॥ अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरस
प्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ॥ स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकं
न्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ ९ ॥ जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्क
रालभालहव्यवाट् ॥ धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्र
चण्डताण्डवः शिवः ॥ १० ॥ दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सु
हृद्विपक्षपक्षयोः ॥ तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवर्तिता कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ ११ ॥

Kashi Maharani Collection, Ramnagar Fort, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कदा निलिम्पनिर्झरी निकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिस्सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ॥ विलोलल
लोचना ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् सदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १२ ॥ तनोतु नो मनोमु
दं विनोदिनी महर्निशा परश्रियः परम्पदं तदङ्गजत्विषाञ्चयः ॥ निलिम्पनाथनागरीकदम्ब
मौलिमल्लिका निगुम्फनिर्झरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ॥ १३ ॥ प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्र
चारिणी महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ॥ विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः शिवेति
मन्त्रभूषणा जगज्जयाय जायताम् ॥ १५ ॥ ॥ इति दशाननकृतं शिवताण्डवस्तवः ॥ ॥ ० ॥
शिवप्रसादमन्तरा रहस्यमेतदद्भुतं शिवस्य केलिजानते दशाननप्रकाशितम् । यदत्र पद्यगह्वरे श्रुतिर्विगा
होकिवन्नसंस्कृता हि व्याकृतिस्तु ते स्तदप्यक्षम्यताम् ॥ ॥ विन्दुङ्गजजभूमध्ये वसरे मार्गशीर्षके ।
गङ्गोपकण्ठे श्रीकाशीमध्ये देवलिलिखियम् ॥ शिव ॥ राम ॥ शिव ॥ राम ॥ शिव ॥

Kashi Maharani Collection, Ramnagar Fort, Varanasi